ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन व खाद्य तेल उद्योग का भौगोलिक विश्लेषण

Geographical Analysis of Oilseed Production and Edible Oil Industry in Bundi District

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

भारतेन्दु गौतम
सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी राजस्थान, भारत

सारांश

उद्योग व विनिर्माण मानव की प्रमुख आर्थिक क्रिया हैं। औद्योगिक विकास किसी भी देश के आर्थिक विकास व प्रगति का द्योतक हैं। उद्योगों को प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता हैं। वे उद्योग जिनमें कच्चे माल के रूप में कृषि उत्पादों का प्रयोग होता है कृषि आधारित उद्योग कहलाते हैं। खाद्य तेल उद्योगों में विभिन्न तिलहनों को कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किया जाता हैं। भारत जैसे देश में जहां कृषि प्रमुख आर्थिक क्रिया है, कृषि आधारित उद्योग अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान रखते हैं। राजस्थान में विविध प्रकार के तिलहनों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता हैं। राजस्थान सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, अलसी जैसे तिलहनों के उत्पादन में अग्रणी हैं। अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिला भी विविध प्रकार के तिलहनों के उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं फलस्वरूप बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग का विकास (विशेषतः वृहद–मध्यम स्तर पर) हुआ हैं। तिलहन उत्पादन व अन्य भौगोलिक दशाओं पर दृष्टिपात करनें पर ज्ञात होता है कि बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास की असीम संभावनाऐं विद्यमान हैं। खाद्य तेल उत्पादन उद्योग को प्रोत्साहन प्रदान कर तथा इसके विकास के समक्ष विद्यमान समस्याओं के समाधान के द्वारा खाद्य तेल उद्योग को बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था का आधार बनाया जा सकता हैं।

Industrial and manufacturing are the main economic activities for humans being. Industrial development represents the economic development and progress of any country. Industries are classified into various categories based on the raw materials which are used. The industries in which agricultural products are used as raw materials are called agro-based industries. Various oilseeds are used as raw materials in the edible oil industries. In a country like India where agriculture is the dominant economic activity, agro-based industries occupy a prominent position in the economy. Various types of oilseeds are produced in abundance in Rajasthan. Rajasthan is a pioneer state in the production of oilseeds like mustard, soybean, groundnut, sesame and flaxseed. The study area Bundi district also holds an important place in the production of various types of oilseeds, resulting in the development of edible oil industry in Bundi district (especially at the large-medium scale). Taking a look at oilseed production and other geographical conditions, it is known that there are immense possibilities of establishment and development of edible oil industry in Bundi district. The edible oil industry can be developed as the base of the economy in Bundi district. It can be done by encouraging the development of edible oil industries, development of agriculture production and solving the problems of industrial sector, especially the problems of edible oil industries.

मुख्य शब्द : विनिर्माण, आर्थिक विकास, कृषि आधारित उद्योग, आर्थिक क्रियाऐं, वृहद–मध्यम स्तर।

Manufacturing, Economic Development, Agro-based Industries, Economic Activities, large-Medium scale.

प्रस्तावना

अध्ययन क्षेत्र

बून्दी जिला राजस्थान के द.पू. में $24^0$59′11′′ सें $25^0$53′11′′ उत्तरी अक्षांश एवं $75^0$19′30′′ से $76^0$19′30′′ पू. देशांतर के मध्य स्थित हैं। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5819.38 वर्ग किमी. हैं। इसकी लम्बाई पू. सें प. तक लगभग 111 किमी. तथा उत्तर सें दक्षिण तक 104.6 किमी. हैं। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 76.41 सेमी. हैं। बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 1110906 (2011) हैं। कुल जनसंख्या का 72 प्रतिशत से अधिक भाग कृषि तथा संबंधित आर्थिक कियाओं में लगा हुआ हैं।

शोध समस्या

शोध कार्य की केन्द्रीय समस्या बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन व खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना एवं विकास (विशेषतः वृहद–मध्यम इकाइयां) तथा वर्तमान दशा के साथ–साथ इस उद्योग के समक्ष विद्यमान समस्याओं का विश्लेषण करना हैं।

जिला बून्दी : अवस्थिति मानचित्र

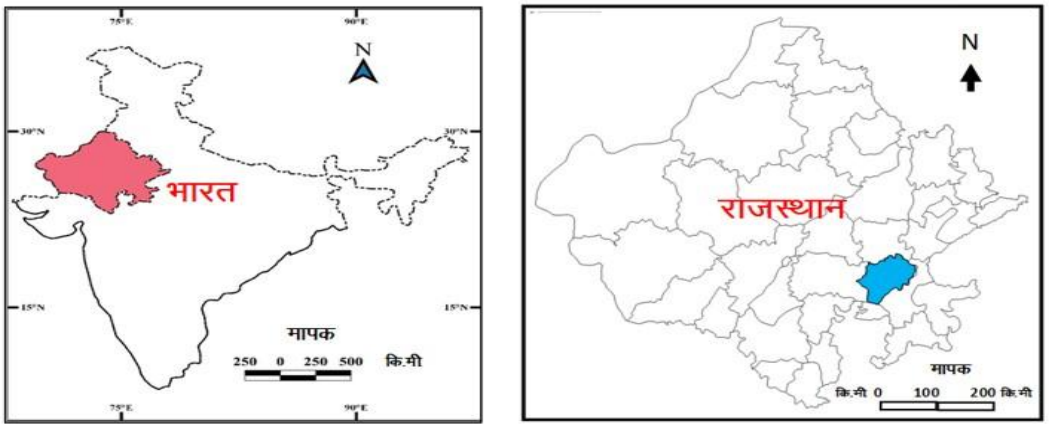

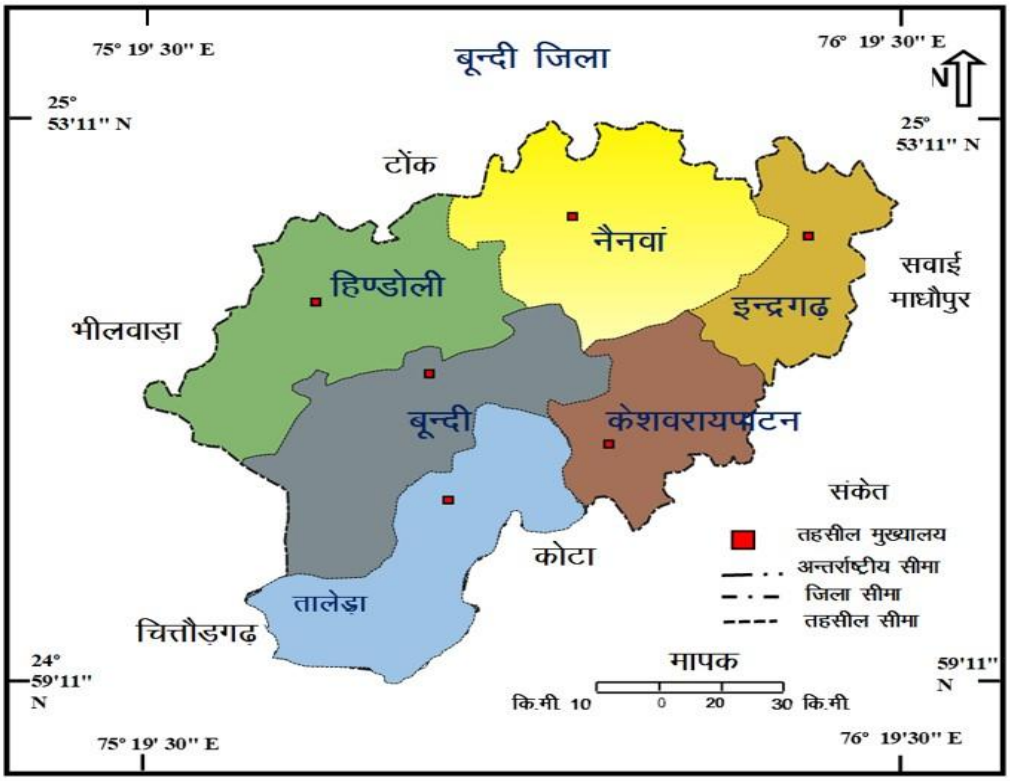

शोध उद्देश्य

शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य–

1. बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास(विशेषतः वृहद–मध्यम इकाइयां) का स्थानिक–भौगोलिक विश्लेषण करना।
2. बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण करना।
3. बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास के लिए उत्तरदायी कारकों का अध्ययन करना।
4. खाद्य तेल उद्योग के विकास के समक्ष विद्यमान समस्याओं का विश्लेषण कर उनके निराकरण के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध कार्य की प्रमुख परिकल्पनाऐं

शोध कार्य की प्रमुख परिकल्पनाऐं निम्न है–

1. बून्दी जिलें की अनुकूलतम भौगोलिक दशाओं का प्रभाव जिले के कृषि उत्पादन विशेषकर तिलहन फसलों के उत्पादन पर पडा हैं।
2. बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन व खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना व विकास के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध परिलक्षित होता हैं।
3. खाद्य तेल उद्योग के समक्ष विद्यमान समस्याओं के निराकरण कर इसे जिले की अर्थव्यवस्था का आधार बनाया जा सकता हैं।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में व्यक्तिगत प्रेक्षण व सर्वेक्षण के द्वारा तिलहन उत्पादन प्रतिरूप व खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना व विकास को व्यवहारिक रूप से समझनें का प्रयास किया गया हैं। शोध कार्य को आधार व तथ्यात्मकता प्रदान करनें के लिए विभिन्न प्रशासकीय प्राकशनों व अभिलेखों से द्वितीयक समंको का संग्रह किया गया हैं। तत्पश्चात संकलित समंको के सारणीयन, आरेखीकरण व क्षेत्रीय कार्य द्वारा विभिन्न शोधकार्योपयोगी निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। खाद्य तेल उद्योगों के स्थानीयकरण को समझनें के लिए वेबर के सिद्धांत के विविधि पक्षों का व्यवहारिक अनुप्रयोग किया गया हैं। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर उनका SWOT विश्लेषण किया गया हैं।

बून्दी जिले में तिलहन उद्योग के स्थानीयकरण का अध्ययन करनें के लिए तहसील अनुसार तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक भी ज्ञात किया गया हैं जिसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है–

तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक =तहसील में कुल तिलहन उत्पादन ÷ तहसील का तिलहनों के अन्तर्गत कुल क्षेत्र × 100

वर्ष 2013–14 सें 2017–18 के समंको के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं तथा वर्ष 2017–18 को आधार वर्ष माना गया हैं।

साहित्य का पुनरावलोकन

खाद्य तेल उद्योग तथा उनसें सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विद्वानों व शोधकर्ताओं के द्वारा अध्ययन किया गया हैं।

जगदीश प्रसाद शर्मा (2002) ने राजस्थान में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन किया। अल्का रांका (2002) ने अजमेर जिले के पोल्ट्री फार्म उद्योग का स्थानिक विश्लेषण कर उसके विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किये। वत्सला शर्मा (2006) ने "अजमेर जिले के संदर्भ में कृषि आधारित उद्योगों का अवस्थिति विश्लेषण" विषय पर अपना विस्तृत शोध कार्य अजमेर जिले के संदर्भ में प्रस्तुत किया। लेखक व शोधकर्ता स्वयं नें (2011) कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक–सामयिक विश्लेषण : जिला बून्दी का प्रतीक अध्ययन विषय पर शोध किया।

Shailendra Gautam and Dr. N.L.(2019) Sharma did a SWOT analysis of Indian Edible Oil Industry." Prem Narayan (2017) studied in detail on the topic "Recent Demand-Supply and Growth of Oil Seeds and Edible Oil in India: An Analytical Approach". AVN Murthy (2016) conducted a research study on Marketing Scenario of Edible Oil Industry in India." S K Kulshrestha, Jai Singh Rathore and Jhabar Singh (2015) studied the "Econimic Growth and Oil Seed Productio in Rajasthan". Dr. P Subramanyachary (2013) conducted a study on "Status of Vegetable Oil Industry-Indian Economy".

खाद्य तेल उद्योग : एक परिचय

किसी भी राष्ट्र के विकास में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। विभिन्न उद्योगों के विकास हेतु अलग–अलग प्रकार के कच्चे माल की आवश्यकता होती हैं। जिन उद्योगों में कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता हैं वे कृषि आधारित उद्योग कहलाते हैं। खाद्य तेल उद्योग भी एक कृषि आधारित उद्योग हैं। खाद्य तेल उद्योग हेतु कच्चा माल विभिन्न प्रकार के तिलहन होते हैं। इनमें मुख्य रूप सें सरसों, सोयाबीन, तिल, अलसी, मूंगफली आदि शामिल हैं। खाद्य तेल उद्योग भारत का भी एक महत्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग हैं। राजस्थान भी विभिन्न प्रकार के तिलहनों के उत्पादन में अग्रणी है अतः राजस्थान खाद्य तेल उद्योग बून्दी जिले का दूसरा महत्त्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग है। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग का विकास मूल रूप से वर्ष 2000 सें 2010 के मध्य में चावल उद्योग में आई अवनति का परिणाम है। धान उत्पादन से मोह भंग होने के उपरांत किसानों का रूझान अपेक्षाकृत कम श्रम में अधिक लाभ देने वाली तिलहन फसलों जैसे–सरसों, सोयाबीन, तिल, की ओर हो गया। परिणामतः सरसों व सोयाबीन जैसी फसलों के उत्पादन में भारी वृद्धि से खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग के विकास के कारण

बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था मूल रूप से कृषि पर आधारित है। प्रचुर एवं विविधतापूर्ण कृषि उत्पादन के कारण बून्दी जिले में विविध कृषि आधारित उद्योग विकसित हो गये हैं। इनमें से एक प्रमुख उद्योग खाद्य तेल उद्योग है। जिले में खाद्य तेल उद्योग के विकास के निम्न कारण रहे –

1. चावल उद्योग प्रारंभ से ही बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था का आधार रहा है जिसका प्रमुख

कारण जिले में धान का प्रचुर उत्पादन है। किन्तु विगत वर्षों में वर्षा की कमी, नहरी पानी का सिंचाई के लिए समय पर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होना, अपेक्षाकृत अधिक श्रम तथा श्रम व पूंजी निवेश की तुलना में कम उत्पादन के कारण गत दस वर्षों में चावल उद्योग में निरंतर गिरावट दर्ज की गई। जिले की अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार इस चावल उद्योग में निरंतर अवनति के कारण औद्योगिक रिक्तता की दशा उत्पन्न होने से अन्य उद्योगों ने जिले में संभावनाएँ तलाशना प्रारंभ कर दिया। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग का विकास इसी प्रक्रिया का परिणाम हैं।

2. बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना विकास का काल वर्ष 1995 सें 2006 के मध्य का माना जाता है जबकि तिलहन उत्पादन विशेषकर सरसों व सोयाबीन में आशातीत वृद्धि दर्ज की गयी तथा धान उत्पादन में गिरावट दर्ज की गई।
3. बून्दी जिले में मुख्य रूप से तीन औद्योगिक फसलों धान, सरसों, सोयाबीन का उत्पादन किया जाता है। सरसों तथा सोयाबीन अपेक्षाकृत कम निवेश तथा अल्पश्रम पर अधिकतम लाभ प्रदान करती है। बून्दी जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 76.41 सेमी. है। धान उत्पादन के लिए आवश्यक वर्षा का औसत 100 सेमी. है तथा पौध के विकास काल में खेत में पर्याप्त मात्रा में जल भरा रहना आवश्यक है। स्पष्ट है कि बून्दी जिले में धान की कृषि मुख्यतः नहरी सिंचाई पर आधारित है। जब तक जिले में धान की फसल को नहरी पानी सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता रहा धान का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन हुआ। किन्तु वर्ष 2001 के उपरांत वर्षा की मात्रा में कमी तथा पर्याप्त मात्रा में नहरी पानी उपलब्ध न होने के कारण बून्दी जिले में धान का उत्पादन क्षेत्र व उत्पादन निरंतर गिरता चला गया। अत्यधिक परिश्रम व पूंजी निवेश के उपरांत भी पर्याप्त उत्पादन न होने के कारण किसानों का रूझान धान उत्पादन से हट गया। वहीं दूसरी ओर सरसों तथा सोयाबीन जैसी फसलों के लिए औसत वर्षा लगभग 50 सेमी. है तथा ये दोनों फसलें अपेक्षाकृत कम परिश्रम व पूंजी निवेश में धान की अपेक्षा अधिक उत्पादन व लाभ प्रदान करती है। परिणामस्वरूप जिले के किसानों का रूझान धान उत्पादन से हटकर सरसों व सोयाबीन की ओर हो गया। गत कुछ वर्षों में बून्दी जिले में सरसों व सोयाबीन के उत्पादन क्षेत्र व उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। तालिका क्रमांक 1.1 में बून्दी जिले में वर्ष 1991–92 से 2005–06 तक धान, सरसों व सोयाबीन उत्पादन का तुलनात्मक प्रतिरूप दिखाया गया हैं। इस अवधि के दौरान ही बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना व आशातीत वृद्धि हुयी। आरेख क्रमांक 1.1 में वर्ष 1995–96 तथा 2005–06 के मध्य धान, सरसों व सोयाबीन उत्पादन का परिवर्तित तुलनात्मक प्रतिरूप दर्शाया गया हैं।

तालिका – 1.1

जिला बून्दी : धान, सरसों, सोयाबीन उत्पादन का तुलनात्मक प्रतिरूप

(उत्पादन मै.टन)

वर्ष	धान	सोयाबीन	सरसों
1991–92	12858	7361	76846
1992–93	42245	11768	60490
1993–94	41320	21934	68529
1994–95	39702	20838	59472
1995–96	46133	21930	61733
1996–97	46502	23409	74199
1997–98	65881	44435	94042
1998–99	81378	55314	57893
1999–2000	110602	21731	100995
2000–01	43058	15469	41869
2001–02	54992	41279	49851
2002–03	2837	15225	17428
2003–04	13206	56959	72873
2004–05	11832	52788	185839
2005–06	24510	88410	178207

स्त्रोत– जिला सांख्यिकी रूपरेखा

आरेख क्रमांक 1.1

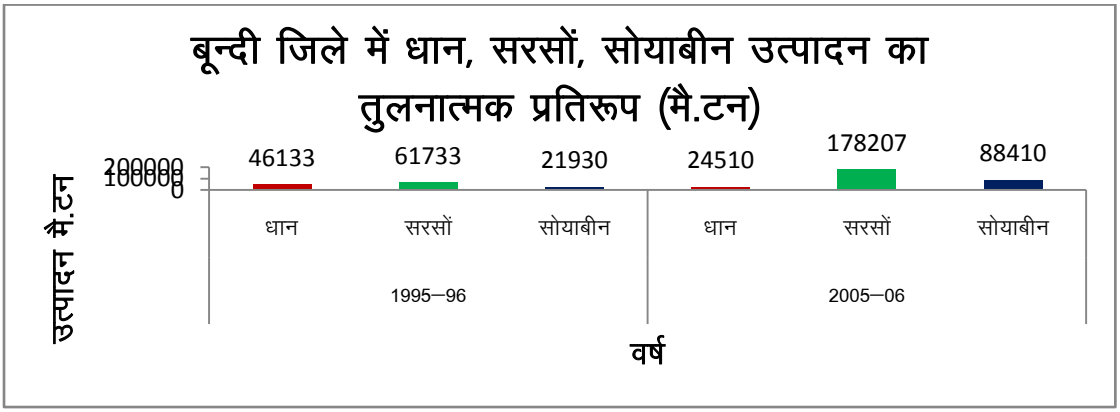

4. वर्ष 2005–06 में बून्दी जिले में 126542 हैक्टेयर क्षेत्र पर 178207 मैट्रिक टन सरसों तथा 72280 हैक्टेयर क्षेत्र पर 88410 मैट्रिक टन सोयाबीन का उत्पादन हुआ। तिल का उत्पादन 4135 मैट्रिक टन तथा मूंगफली का उत्पादन 270 मैट्रिक टन हुआ। इस प्रकार सरसों, सोयाबीन तथा अन्य तिलहन फसलों का बढ़ता उत्पादन ही खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना व विकास हेतु सुदृढ़ आधार प्रदान कर सका तथा बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों की वृद्धि संभव हो सकी।
5. बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग के विकास का एक अन्य प्रमुख कारण जिले में ग्रामीण व कुटीर स्तर पर इस उद्योग का पहले से ही संचालित होना रहा। बून्दी जिले में तिलहनों से तेल निकालने का कार्य कुटीर व ग्रामीण स्तर पर प्रारम्भ से ही प्रायः सभी तहसीलों में होता रहा है। इसका लाभ भी खाद्य तेल उद्योग के विकास को मिला।
6. बून्दी जिला पशुधन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है । खाद्य तेल उद्योगों में तिलहनों से तेल निकालने के उपरान्त शेष अपशिष्ट पदार्थ (खली) इन पशुओं के चारे के काम आ जाती है। जिससे इन उद्योगों को अतिरिक्त आय होती है। अतः खली उत्पादन (Deoiled Cake) सहायक उद्योग के रूप में कार्य करता हैं।
7. बून्दी जिले की जनसंख्या 1110906 (2011) है। जो इन खाद्य तेल उद्योगों द्वारा उत्पादित माल की खपत की दृष्टि से संतोषजनक है। इसके अतिरिक्त समीप ही 35 कि.मी. दूरी पर कोटा महानगर स्थित है जहाँ पर भी खाद्य तेल की पर्याप्त खपत होती है। जिले के प्रमुख खाद्य तेल उद्योगों एडवांटेज ऑयल इंडिया प्रा. लिमिटेड व अढानी विल्मार लिमिटेड से तो अन्य राज्यों व विदेशों को भी निर्यात होता हैं।
8. पर्याप्त जनसंख्या सस्ता श्रम भी उपलब्ध करवाती हैं जिससें अन्य जिलों व राज्यों पर श्रमिकों के लिए निर्भर नहीं रहना पडता हैं।
9. बून्दी जिले का समग्र भौगोलिक वातावरण औद्योगिक विकास हेतु अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करता हैं। इसी अनुकूल भौगोलिक वातावरण ने भी बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग के विकास को प्रोत्साहित किया हैं।

   उक्त कारणों से बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग का पर्याप्त विकास हुआ है।

बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों की अवस्थापना व विकास

चावल उद्योग में आई अवनति के उपरांत खाद्य तेल उद्योग कुछ ही वर्षों में बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था के आधार प्रमुख उद्योगों में से एक हो गया है।

वर्तमान में बून्दी जिले में वृहद–मध्यम स्तर की 3 खाद्य तेल इकाईयाँ तथा 129 तेल मिलें और 67 तेल घाणियाँ कार्यरत हैं। तालिका 1.2 में बून्दी में वृहद–मध्यम स्तर की खाद्य तेल उत्पादक इकाईयों का विवरण दिया गया है। वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उद्योग का विकास वर्ष 1997 से प्रारम्भ होता है। जबकि "जी.पी. सेवाल प्रोटीन्स लि." ने बून्दी जिले में अपना खाद्य तेल प्रसंस्करण उद्योग बून्दी तहसील के रामगंज बालाजी नामक स्थान पर स्थापित किया। इस उद्योग ने "चम्बल" ब्रांड से सोयाबीन तेल का उत्पादन प्रारंभ किया। वर्ष 2002–03 में इस उद्योग का अधिग्रहण बहुराष्ट्रीय समूह "बंगे इंडिया प्रा. लिमिटेड" ने कर लिया। वर्तमान में यह उद्योग एडवांटेज ऑयल प्रा. लिमिटेड द्वारा अधिग्रहीत व संचालित हैं।

इस उद्योग की सफलता से प्रेरित होकर वर्ष 2003 में एक अन्य खाद्य तेल उद्योग "रूचि सोया इण्डस्ट्रीज लिमिटेड" की स्थापना तालेडा तहसील के गोविन्दपुर बावड़ी स्थान पर स्थित रीको औद्योगिक क्षेत्र में की गई। यह इकाई सोयाबीन व सरसों से परिष्कृत तेल, कच्चा तेल तथा खली (तिलहन से तेल निकालने के उपरान्त शेष अपषिष्ट (Deoiled Cake) का उत्पादन करती है।

वर्ष 2004 में बून्दी जिले में तीसरा वृहद–मध्यम स्तर का खाद्य तेल उद्योग अढ़ानी विल्मार लि. के नाम से सिलोर रोड़, बून्दी तहसील में स्थापित हुआ। यह उद्योग "फॉर्चून" ब्राण्ड से सोयाबीन का तेल तथा खली (Deoiled Cake) का उत्पादन करता है। खाद्य तेल उद्योगों के बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था में महत्त्व का ज्ञान इस तथ्य से हो जाता है कि वर्तमान समय में बून्दी जिले में 8 वृहद–मध्यम स्तर की औद्योगिक इकाईयाँ है जिनमें से 6 इकाईयाँ वर्तमान में कार्यरत है तथा इन छह में से तीन इकाईयाँ खाद्य तेल प्रसंस्करण उद्योग की है।

ग्रामीण व कुटीर उद्योग स्तर पर बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग अधिक प्रचलित है। प्रायः हर कस्बे तथा बड़े गाँवों में तेल घाणियों व ऑयल मिलों का संचालन किया जाता है। इनमें कहीं विद्युत चालित घाणियों अथवा कहीं बैलों से चलाई जाने वाली घाणियों के द्वारा रबी के मौसम में सरसों तथा खरीफ के मौसम में मूंगफली, तिल, सोयाबीन आदि से तेल निकालने का कार्य होता है। बून्दी जिले में सरसों, सोयाबीन, तिल, मूंगफली आदि फसलों का उत्पादन न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी तहसीलों में होता है। अतः ग्रामीण व कुटीर स्तर पर खाद्य तेल उद्योग प्रायः सभी तहसीलों के गाँवों व कस्बों में स्थित है तथा यह उद्योग बून्दी जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार भी है।

वर्ष 2005–06 में बून्दी तहसील में बून्दी जिले का 24.90 प्रतिशत सरसों, 30.19 प्रतिशत सोयाबीन, 16.92 प्रतिशत तिल का उत्पादन हुआ। केशवरायपाटन में बून्दी जिले का 18.80 प्रतिशत सरसों, 55.56 प्रतिशत सोयाबीन तथा 9.86 प्रतिशत तिल का उत्पादन हुआ। नैनवाँ तहसील में बून्दी जिले का 22.76 प्रतिशत सरसों, 1.88 प्रतिशत सोयाबीन, 12.

81 प्रतिशत तिल उत्पादित हुआ। हिण्डोली तहसील में बून्दी जिले का 12.39 प्रतिशत सरसों, 4.58 प्रतिशत सोयाबीन, 50.81 प्रतिशत तिल तथा 22.22 प्रतिशत मूंगफली का उत्पादन हुआ। इन्द्रगढ़ में बून्दी जिले का 21.13 प्रतिशत सरसों, 7.89 प्रतिशत सोयाबीन, 8. 92 प्रतिशत तिल, 33.33 प्रतिशत मूंगफली का उत्पादन हुआ।

स्पष्ट है कि बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन में पर्याप्त विविधता एवं प्रचुरता है। ग्रामीण व कुटीर स्तर पर खाद्य तेल उद्योग के स्थानिक वितरण पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि सरसों तेल उद्योग प्रायः सभी तहसीलों में, सोयाबीन तेल उद्योग मुख्यतः बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में, मूंगफली तेल उद्योग नैनवाँ, हिण्डोली, इन्द्रगढ़ तहसीलों में, तिल के तेल का उद्योग मुख्यतः बून्दी, हिण्डोली, नैनवाँ तहसीलों में केन्द्रित है।

वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उद्योग प्रतिरूप

बून्दी जिले में वर्तमान समय में आठ वृहद–मध्यम स्तर की खाद्य औद्योगिक इकाइयां स्थापित हैं। इन औद्योगिक इकाइयों में से छह औद्योगिक इकाइयां वर्तमान समय में कार्यरत हैं। उल्लेखनीय है कि इन छह इकाइयों में से तीन इकाइयां खाद्य तेल उत्पादक इकाइयां हैं। ये तीन इकाइयां एडवांटेज ऑयल मिल प्रा. लिमिटेड, अढानी विल्मार प्रा. लिमिटेड व रूचि सोया इंडस्ट्रीज प्रा. लिमिटेड हैं। तालिका 1.2 में वर्तमान समय में वृहद–मध्यम स्तर पर कार्यरत खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों का प्रतिरूप दर्शाया गया हैं।

तालिका 1.2

वृहद–मध्यम स्तर पर कार्यरत खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों का प्रतिरूप

क.सं.	इकाई का नाम	अवस्थिति	उत्पादित पदार्थ निर्यातित पदार्थ	निर्यात
1.	एडवांटेज ऑयल मिल	रामगंजबालाजी, तहसील–बून्दी	खाद्य तेल (अपरिष्कृत व परिष्कृत), खली (Deoiled Cake)	खाद्य तेल, खली (Deoiled Cake)
2.	अढानी विल्मार लिमिटेड	सीलोर रोड, तहसील बून्दी	खाद्य तेल – सोया व सरसों (अपरिष्कृत व परिष्कृत), खली (Deoiled Cake)	1. लेसिथिन – जकार्ता को, 2. सोया व सरसों खली (Deoiled Cake) – सिंगापुर, जर्मनी, द. कोरिया।
3.	रूचि सोया इंडस्ट्रीज लिमिटेड	रीको इंडस्ट्रीयल एरिया, गोविंदपुर बावडी, तहसील–तालेडा।	खाद्य तेल (अपरिष्कृत व परिष्कृत), खली (Deoiled Cake)	खाद्य तेल, खली (Deoiled Cake)

स्त्रोतः जिला औद्योगिक संभाविता सर्वेक्षण

तालिका से स्पष्ट है कि वृहद–मध्यम की खाद्य तेल उत्पादक इकाइयां बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यदि समग्र रूप से दृष्टिपात किया जाये तो ज्ञात होता है कि ग्रामीण व कुटीर स्तर पर खाद्य तेल उद्योग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। ग्रामीण व कुटीर स्तर पर खाद्य तेल उद्योग तेल घाणी उघोग के रूप में प्रचलित हैं। उक्त उद्योग ग्रामीण स्तर पर अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बने हुये हैं।

बून्दी जिले में तिलहन उत्पादन का वर्तमान प्रतिरूप

बून्दी जिले में तिलहनों के अन्तर्गत मुख्यतः राई एवं सरसों, सोयाबीन, तिल, मूंगफली, अलसी व तारामीरा उगाये जाते हैं। वर्ष 2017–18 में बून्दी जिले में 46113 है. क्षेत्र पर 60344 मै. टन तिलहन का उत्पादन किया गया। तालिका क्रमांक 1.3 में बून्दी जिले में वर्ष 2017–18 में तहसील अनुसार तिलहन उत्पादन प्रतिरूप को दर्शाया गया हैं। वर्ष 2017–18 में इन्द्रगढ तहसील द्वारा बून्दी जिले का सर्वाधिक 40. 84 प्रतिशत राई–सरसों उत्पादित किया गया। इसी प्रकार केशवरायपाटन तहसील द्वारा बून्दी जिले का सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन 45.59 प्रतिशत किया गया। वर्ष 2017–18 में बून्दी जिले का सर्वाधिक तिल उत्पादन इन्द्रगढ तहसील में 32.13 प्रतिशत हुआ। इसी प्रकार सर्वाधिक अलसी का उत्पादन तालेडा तहसील में 66.66 प्रतिशत किया गया। सामान्य रूप से इन्द्रगढ, नैनवां व हिण्डोली तहसीलें बून्दी जिले का 87.05 प्रतिशत राई–सरसों उत्पादित करती हैं। इसी प्रकार बून्दी, तालेडा व केशवरायपाटन तहसीलें बून्दी जिले का लगभग 76 प्रतिशत सोयाबीन उत्पादित करती हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि सोयाबीन की फसल को अपेक्षाकृत सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती हैं और बून्दी, तालेडा व केशवरायपाटन तहसीलें चम्बल के नहरी सिंचाई तंत्र के अन्तर्गत आती हैं। सरसों की फसल के लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं होती हैं अतः इसका उत्पादन इन्द्रगढ, नैनवां व हिण्डोली तहसीलों में किया जाता है जहां पर सिंचाई की सुविधाऐं अपेक्षाकृत कम हैं। इसी कारण बून्दी जिले के वृहद–मध्यम स्तर की तीनों सोयाबीन खाद्य तेल उत्पादक इकाइयां बून्दी व तालेडा तहसील में ही स्थापित हुयी हैं। नैनवां, इन्द्रगढ व हिण्डोली तहसीलों में खाद्य तेल उद्योग ग्रामीण व कुटीर स्तर पर अधिक विकसित हुआ हैं। इन ग्रामीण व कुटीर स्तर के उद्योगों में प्राचीन घाणी विधि से सरसों, मूंगफली व तिल आदि से तेल निकाला जाता हैं। अवशिष्ट पशुओं को खिलानें के काम आता हैं। बून्दी जिले का 70.27 प्रतिशत तिल इन्द्रगढ, हिण्डोली व नैनवां तहसीलों में ही उगाया जाता हैं।

तालिका 1.3
बून्दी जिले में तिलहन फसलों का उत्पादन : 2017–18 (मै.टन)

तहसील	तिलहन						
	तिल	राई–सरसों	अलसी	तारामीरा	सोयाबीन	अन्य	योग
बून्दी	21	1087	3	15	1199	0	2325
तालेडा	32	578	22	3	6564	5	7210
केशवरायपाटन	46	2751	3	1	11633	0	14436
इन्द्रगढ	107	13930	2	5	3725	0	17898
नैनवां	58	7948	1	17	1837	0	9986
हिण्डोली	69	7807	2	16	553	0	8489

स्त्रोतः जिला सांख्यिकी रूपरेखा

बून्दी जिले में तहसील अनुसार तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक

बून्दी जिले में तिलहन उद्योग के विकास व स्थानीयकरण को समझने के लिए जिले का तहसील अनुसार तिलहन उत्पादकता गहनता सूचकांका ज्ञात किया गया हैं। तिलहन उत्पादता गहनता सूचकांक को ज्ञात करनें के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया हैं–

तहसील में कुल तिलहन उत्पादन ÷ तहसील का तिलहनों के अन्तर्गत कुल क्षेत्र × 100

इस सूत्र के आधार पर तहसील अनुसार तिलहन उत्पादन गहनता ज्ञात की गई हैं। सूत्र द्वारा गणना से प्राप्त परिणामों को तालिका क्रमांक 1.4 में दर्शाया गया हैं।

तालिका 1.4
बून्दी जिले में तहसील अनुसार तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक : 2017–18 (प्रतिशत में)

क्र.सं.	तहसील	तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक
1.	बून्दी	87.93
2.	तालेडा	150.64
3.	केशवरायपाटन	114.55
4.	इन्द्रगढ	162.87
5.	नैनवां	105.77
6.	हिण्डोली	150.22

स्त्रोत–सूत्र गणना

तालिका के विश्लेषण करनें से ज्ञात होता है कि बून्दी जिले की समस्त तहसीलें तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक की दृष्टि सें अग्रणी हैं। सर्वाधिक तिलहन उत्पादन गहनता सूचकांक के अन्तर्गत इन्द्रगढ तहसील व इस दृष्टि सें अंतिम स्थान पर बून्दी तहसील हैं। जिले की यह उच्च तिलहन उत्पादन गहनता ही बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योगों के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों का स्थानीयकरण विश्लेषण (वेबर के स्थानीयकरण कारकों पर आधारित)

बून्दी जिले में वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उत्पादन की तीन इकाइयां कार्यरत हैं। इन तीन इकाइयों में से दो इकाइयां जिनमें एडवांटेज ऑयल इंडिया प्रा. लि. व अढानी विल्मार प्रा. लि. शामिल हैं, बून्दी तहसील में स्थापित हैं। एक अन्य मिल रूचि सोया इंडस्ट्रीज लिमिटेड तालेडा तहसील मे स्थापित हुयी हैं। उक्त दोनों तहसीलों में इन खाद्य तेल इकाइयों हेतु आवश्यक सुविधाऐं उपलब्ध हैं। उक्त सुविधाओं का विश्लेषण तालिका क्रमांक 1.5 में किया गया हैं। अल्फ्रेड वेबर द्वारा प्रतिपादित सर्वत्र सुलभ किन्तु मिश्रित पदार्थ की श्रेणी में यहां तिलहन को रखा गया है जिनका उत्पादन बून्दी जिले की सभी तहसीलों में किया जाता हैं यह तालिका क्रमांक 1.4 से स्पष्ट हैं। परिवहन लागत बून्दी जिले में वृहद–मध्यम स्तर की खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों के स्थानीयकरण पर विशेष प्रभाव डालती प्रतीत होती है क्योंकी बून्दी व तालेडा तहसीलों में रेल व सडक परिवहन के साधन स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं। अन्य तहसीलों यथा इन्द्रगढ व नैनवां में परिवहन के साधनों की उपलब्धता तुलनात्मक रूप से कम हैं। इसी प्रकार तिलहन शुद्ध पदार्थ नहीं है अतः परिवहन लागत विशेष महत्व रखती हैं। इसके अतिरिक्त विविध सेवाऐं यथा– पूंजी, प्रशासनिक, तकनीकी, बाजार व अन्य संस्थागत कार्य आदि जिला मुख्यालय व कोटा महानगर के निकट होने से आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं। कोटा महानगर संभाग मुख्यालय भी है। इसी कारण तीनों वृहद–मध्यम स्तर की खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों की अवस्थापना बून्दी व तालेडा तहसीलों में ही हुयी हैं।

तालिका 1.5
बून्दी जिले में वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उद्योग के स्थानीयकरण कारक

क.सं.	औद्योगिक इकाई	तहसील	स्थानीयकरण कारक
1.	एडवांटेज ऑयल प्रा. लिमिटेड	बून्दी	बून्दी तहसील व सम्पूर्ण जिले का तिलहन उत्पादन, आयात निर्यात हेतु दिल्ली–मुम्बई रेल्वे लाइन (केशवरायपाटन,कोटा) व कोटा–चित्तौडगढ रेल्वे लाइन (बून्दी, कोटा) व राष्ट्रीय राजमार्ग–52 तथा कोटा–लालसोट मेगाहाइवे की सुविधा, जिला मुख्यालय होने से वित्त, प्रशासन, विभागीय, तकनीकी सुविधाओं व विद्युत शक्ति की प्राप्ति, स्थानीय बाजार व निकट ही कोटा महानगर का विशाल बाजार उपलब्ध होना, पर्याप्त व सस्ते श्रमिक व अन्य आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता, स्थापित होने वाले प्रथम वृहद–मध्यम स्तर के खाद्य तेल उद्योग का दर्जा।
2.	अढ़ानी विल्मार प्रा. लि.	बून्दी	बून्दी तहसील व सम्पूर्ण जिले का तिलहन उत्पादन, आयात निर्यात हेतु दिल्ली–मुम्बई रेल्वे लाइन (केशवरायपाटन,कोटा) व कोटा–चित्तौडगढ रेल्वे लाइन (कोटा, बून्दी) व राष्ट्रीय राजमार्ग–52 तथा कोटा–लालसोट मेगाहाइवे की सुविधा, जिला मुख्यालय होने से वित्त, प्रशासन, विभागीय तकनीकी सुविधाओं व विद्युत शक्ति की प्राप्ति, स्थानीय बाजार व निकट ही कोटा महानगर का विशाल बाजार उपलब्ध होना, पर्याप्त व सस्ते श्रमिक व अन्य आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता।
3.	रूचि सोया इण्डस्ट्रीज लिमिटेड	तालेडा	तालेडा तहसील व सम्पूर्ण बून्दी जिले व न्यूनाधिक रूप में कोटा जिले का तिलहन उत्पादन, आयात निर्यात हेतु दिल्ली–मुम्बई रेल्वे लाइन (केशवरायपाटन, कोटा) व कोटा–चित्तौडगढ रेल्वे लाइन (बून्दी, कोटा) व राष्ट्रीय राजमार्ग–52 व 76 (कोटा–कांडला) तथा कोटा–लालसोट मेगाहाइवे की सुविधा, कोटा महानगर निकट (10 किमी. से भी कम) होने से वित्त, प्रशासन, विभागीय तकनीकी सुविधाओं व विद्युत शक्ति की प्राप्ति, जिला मुख्यालय से भी विभिन्न सुविधाओं की प्राप्ति, स्थानीय बाजार व निकट ही कोटा महानगर का विशाल बाजार उपलब्ध होना, पर्याप्त व सस्ते श्रमिक व अन्य आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता।

स्त्रोतः व्यक्तिगत प्रेक्षण व विश्लेषण

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि बून्दी जिले की तीनों वृहद–मध्यम स्तर की खाद्य तेल उत्पादक इकाइयां इनके पृष्ठ प्रदेश में पायी जाने वाली अनुकूल दशाओं के कारण ही स्थापित व विकसित हुयी हैं। इन अनुकूल भौगोलिक कारकों का विश्लेषण करनें पर स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में बून्दी जिले में वृहद–मध्यम स्तर पर खाद्य तेल उद्योग के विकास की प्रचुर संभावनाऐं विद्यमान हैं।

जिला बून्दी : खाद्य तेल उद्योग का SWOT विश्लेषण

बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना, विकास व भविष्य में विकास की संभावनाओं को तलाशनें के लिए SWOT विश्लेषण किया गया हैं। इसके अन्तर्गत खाद्य तेल उद्योग की शक्तियां(आधार) Strength, कमजोरियां Weakness, अवसर Opportunities, चुनौतियां Threats का विश्लेषण किया गया हैं।

शक्तियां(आधार) Strength

1. तिलहन उत्पादन हेतु अनुकूल भौगोलिक दशाऐं।
2. पर्याप्त तिलहन (सोयाबीन, सरसों, तिल) उत्पादन।
3. आयात–निर्यात हेतु रेल व सडक परिवहन।
4. सस्ता श्रम व बाजार की उपलब्धता।
5. उद्योग का पूर्व में ही ग्रामीण व कुटीर स्तर पर विकसित होना।

कमजोरियां Weakness

1. अनियमित व अपर्याप्त सिंचाई सुविधाऐं।
2. अस्थिर प्रबंधन।
3. कच्चा माल उत्पादन में अनियमितता।

4. आधारभूत सुविधाओं यथा पूंजी, कुशल प्रबंधन व तकनीकी दक्षता का अभाव।
5. प्रशासनिक व राजनीतिक उदासीनता।
6. शोध का अभाव।
7. राजकीय सहायता व पूंजी का अभाव।
8. अद्यतन तकनीकी का अभाव व अधिक उत्पादन लागत।
9. कम उत्पादकता वाले बीज।

अवसर Opportunities

1. विविधतापूर्ण तिलहन उत्पादन।
2. औद्योगिक क्षेत्र में विकास की प्रचूर संभावनाऐं।
3. कृषकों का नकदी फसलों की ओर रूझान।
4. औद्योगिक क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करनें वाली भौगोलिक दशाऐं।
5. निर्भर उद्योगों यथा– पशुआहार, खली (Deoiled Cake) का विकसित होना।

चुनौतियां Threats

1. चावल उद्योग से प्रतिस्पर्द्धा।
2. तिलहन व खाद्यान्न उत्पादन के मध्य प्रतिस्पर्द्धा।
3. निवेश हेतु अनुकूल प्रशासनिक–राजनीतिक रूझान का न होना।
4. कृषकों का कृषि उत्पादन की ओर परिवर्तनशील रूझान।
5. वृहद–मध्यम स्तर पर रूग्ण इकाइयों की बढती संख्या।
6. सस्ते खाद्य तेलों से प्रतिस्पर्द्धा।

सुझाव

बून्दी जिला न केवल तिलहन अपितु खाद्य तेल उत्पादन व निर्यात में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग का विकास वृहद–मध्यम स्तर पर विशेष रूप से हुआ हैं। इतना ही नहीं खाद्य तेल उद्योग लघु तेल मिलों व तेल घाणियों के रूप में ग्रामीण स्तर पर भी अर्थव्यवस्था का आधार बना हुआ हैं। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास की प्रचुर संभावनाऐं विद्यमान हैं। आवश्यकता केवल इनके विकास के समक्ष उपस्थित बाधाओं को दूर करनें की हैं। बून्दी जिले में खाद्य तेल उद्योग के विकास के समक्ष विभिन्न ज्वलंत समस्याऐं विद्यमान हैं। इन समस्याओं का उल्लेख SWOT विश्लेषण के अन्तर्गत किया गया हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु अध्ययन व विश्लेषण से कतिपय सुझाव उभर कर सामने आते हैं जिनके द्वारा खाद्य तेल उद्योग के विकास के समक्ष विद्यमान समस्याओं को दूर किया जा सकता हैं।

बून्दी जिले मे खाद्य तेल उद्योग के समक्ष प्रमुख समस्या कच्चे माल की हैं। बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार के तिलहनों का उत्पादन किया जाता हैं। कच्चे माल के उत्पादन के समक्ष प्रमुख समस्या अस्थिर उत्पादन की हैं। अतः कच्चे माल की स्थायी उपलब्धता के लिए कृषकों को प्रमाणिक बीज व अन्य तकनीकी व वित्तीय सहायता उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। जिले में एक प्रमाणिक राजकीय बीज केन्द्र की स्थापना की महती आवश्यकता हैं। तिलहन उत्पादन के लिए पर्याप्त सिंचाई की सुविधाओं की उपलब्धता भी आवश्यक है अतः बून्दी जिले की सिंचाई की सुविधाओं में विस्तार व सुधार की आवश्यकता है ताकि तिलहन फसलों को समय पर सिंचाई हेतु पर्याप्त जल उपलब्ध करवाया जा सके। अस्थिर प्रशासन व कुशल प्रबंधन का न होना भी खाद्य तेल उद्योगों के समक्ष एक बडी समस्या हैं। इसी कारण वर्तमान में एडवांटेज ऑयल प्रा. लि. के नाम से संचालित मिल का स्वामित्व तीन बार बदल चुका है तथा पूर्व में तालाबंदी का भी शिकार हो चुकी हैं। अतः इकाईयों के सफल संचालन हेतु कुशल प्रबंधन की आवश्यकता हैं। बून्दी जिले में उद्योगों हेतु आधारभूत सुविधाओं यथा– पूंजी उपलब्धता, वित्तीय सुविधाऐं, विभागीय सुविधाऐं व तकनीकी दक्षता या तो तुलनात्मक रूप से कम है अथवा स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं हैं। औद्योगिक इकाईयों हेतु वित्तीय सुविधाओं की उपलब्धता होनी अत्यंत आवश्यक हैं। जिले में विद्यमान बैंकिंग संस्थाऐं इस हेतु पर्याप्त नहीं हैं। इसी प्रकार जिला उद्योग केन्द्र की ओर से भी जिले में विद्यमान खाद्य तेल औद्योगिक इकाइयों के विकास व नवीन औद्योगिक इकाइयों की अवस्थापना के प्रयास किये जाने चाहिए। इस हेतु जिला उद्योग विभाग द्वारा खाद्य तेल उद्योग की अवस्थापना व विकास हेतु एक प्रभावी कार्य योजना बनाकर राज्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत की जानी चाहिए। इसमें विद्यमान औद्योगिक इकाइयों के प्रशासन का भी सहयोग लिया जा सकता हैं। बून्दी जिले में औद्योगिक विकास के प्रति प्रशासनिक व राजनीतिक उदासीनता प्रारंभ से ही रही है। वर्तमान औद्योगिक प्रतिरूप में भी स्थानीय प्रशासनिक व राजनीतिक सहयोग व सक्रीयता न्यून ही हैं। स्थानीय प्रशासन व राजनेताओं की ओर से विद्यमान खाद्य तेल उत्पादक इकाइयों के संरक्षण व नवीन इकाईयों की अवस्थापना के प्रयास किये जाने चाहिए। जिले में औद्योगिक निवेश को आकर्षित करनें वाला वातावरण बनाना इन्हीं का उत्तरदायित्व हैं। जिले के कृषि व औद्योगिक क्षेत्र में शोध को बढाव दिया जाये ताकि खाद्य तेल उत्पादन की नवीन इकाईयों की अवस्थापना व विकास की संभावनाऐं तलाशी जा सकें। उक्त उपाय बून्दी जिले की खाद्य तेल उत्पादक इकाईयों हेतु संजीवनी का काम करेगें।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बून्दी जिले के औद्योगिक भू दृश्य में खाद्य तेल उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान हैं। बून्दी जिले में खाद्य तेल उत्पादक इकाईयों का महत्व इसी तथ्य सें स्पष्ट है कि वर्तमान समय में कार्यरत छहः वृहद–मध्यम स्तर की औद्योगिक इकाईयों में सें तीन इकाइयां खाद्य तेल उत्पादन की हैं। ग्रामीण तथा कुटीर स्तर पर भी खाद्य तेल उद्योग बून्दी जिले का प्रमुख उद्योग हैं। बून्दी जिला तिलहनों के उत्पादन की दृष्टि से भी अग्रणी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का सारांश यही है कि

बून्दी जिले में विद्यमान अनुकूल भौगोलिक दशाओं को देखते हुये खाद्य तेल उद्योग के विकास की अपार संभावनाऐं विद्यमान हैं। इन संभावनाओं का दोहन करके बून्दी जिले को राजस्थान के ही नहीं वरन भारत के प्रमुख औद्योगिक दृष्टि से विकसित जिलों की श्रेणी में रखा जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *Kachru R.P. agro processing industries in India – growth, status and prospects.*
2. *Kanchan (2016) development of agro based industries. International journal of research in economics and social sciences. Volume 6 issue 10 ISSN: 2249-7382.*
3. *Sherawat PS. Agro processing industries a challenging entrepreneurship for rural development. The international indigenous journal of entrepreneurship advancement, strategy and education, 2006*
4. *Chaudhary, M.R. (1970), Indian Industrial Development and Locatiuon, Indian Book House, Kolkate.*
5. *Durrani, P.K. (1965), "Industrial Development and Locational Factors in Rajasthan". Annals of Social Sciences, Vol. 1, pp 45-46.*
6. *शर्मा, बी.एल. (2004): सैद्धांतिक एवं औद्योगिक भूगोल, रोहिणी प्रकाशन, जयपुर।*
7. *जिला जनगणना पुस्तिका, बून्दी – 2011।*
8. *जिला सांख्यिकी प्रतिवेदन प्रतिवेदन – 2014, 2015, 2016, 2017, 2018।*
9. *जिला भू अभिलेख प्रतिवेदन – 2014, 2015, 2016, 2017, 2018।*
10. *जिला औद्योगिक संभाविता सर्वेक्षण रिर्पाट – 2018।*